डॉ.पी.एस.पाटील
एम.ए.,पीएच.डी.
अध्यक्ष,हिन्दी विभाग
तथा
अध्यक्ष,हिन्दी अध्ययन मंडल,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर ।

संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु शोध-प्रबन्ध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाय ।

तिथि : 27 MAY 1996
कोल्हापुर ।

(डॉ.पी.एस.पाटील.)
अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर – ४१६ ००४

डॉ.अर्जुन गणपति चव्हाण
एम.ए.,बी.एड.,पीएच.डी.
अधिव्याख्याता,हिन्दी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

प्र मा ण प त्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री.चतुर्भुज हंबिरराव गिड्डे ने मेरे निर्देशन में "रेवती सरन शर्मा के 'चिराग की लौ' नाटक का कथ्य,शिल्प और मंचीयता" लघु शोध-प्रबन्ध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम.फिल(हिन्दी) उपाधि के लिए लिखा है। पूर्व योजना के अनुसार संपन्न इस कार्य में शोधार्थी ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत किये गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही और मौलिक है। प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

शोध-निर्देशक

तिथि 27 MAY 1996
कोल्हापुर।

डॉ.अर्जुन गणपति चव्हाण

प्रस्थापन

"रेवती सरन शर्मा के 'चिराग की लौ' नाटक का कथ्य, शिल्प और मंचीयता" लघु शोध प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल (हिन्दी) की उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है । यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

शोध - छात्र

(श्री. चतुर्भुज हंबिरराव गिड्डे)

तिथि 27 MAY 1996

कोल्हापुर ।

प्रस्तावना

भूमिका

एम.ए.की पढाई के दौरान रेवती सरन शर्मा के ' न धर्म, न ईमान ' और ' अन्धेरे का बेटा ' आदि नाटक मुझे पढने को मिले । तब सहज ही मैं उनके लेखन के प्रति आकर्षित हुआ । ' न धर्म, न ईमान ' तथा ' अन्धेरे का बेटा ' इन नाटकों के उपरांत मुझे उनका ' चिराग की लौ ' नाटक पढने को मिला । इसमें उन्होंने दिखाया है कि भ्रष्टाचार, रिश्वत, दलाली जैसी समाज विघातक प्रवृत्तियों का उच्चाटन आज भी संभव है । आज की बढती महँगाई, बेरोजगारी तथा आर्थिक तंगी का समाधान भ्रष्टाचार, रिश्वत और दलाली से पैसा कमाना नहीं है, अपितु यह उसकी जड़ है । अगर देश का हर व्यक्ति नैतिकता, ईमानदारी और आदर्श को अपनायेगा तो देश को खोखला बनानेवाली इन बुरी प्रवृत्तियों को नष्ट करना सहज संभव है । इस दृष्टि से ' चिराग की लौ ' नाटक मुझे बहुत ही सार्थक लगा । इसीलिए मैंने निश्चय किया कि एम.फिल.के लिए रेवती सरन शर्मा के ' चिराग की लौ ' नाटक पर ही शोध-कार्य करूँगा । अत: "रवती सरन शर्मा के ' चिराग की लौ ' नाटक का कथ्य, शिल्प और मंचीयता " इसविषाय पर शोध-कार्य करने के लिए श्रध्देय गुरूवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाणजी ने स्वीकृति दे दी और मेरा शोध-कार्य आरंभ हुआ ।

इस विषाय का अध्ययन करते समय मेरे मन में कुछ सवाल पैदा हुए थे, वे इस प्रकार है --

(१) हिन्दी नाटकों की विकास परंपरा में रेवती सरन शर्मा का स्थान क्या है ?

(२) ' चिराग की लौ ' नाटक का कथ्य क्या है ?

(३) ' चिराग की लौ ' शिल्प की दृष्टि से कैसा नाटक है ?

(४) मंचीयता की दृष्टि से ' चिराग की लौ ' कैसा नाटक है ?

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबन्ध को चार अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय - "हिन्दी नाटकों की विकास परंपरा तथा रेवती सरन शर्मा के नाटक।"

इस अध्याय में नाट्य प्रस्तुति के प्राथमिक प्रयासों से लेकर आधुनिक काल में प्रचलित नाट्य प्रकारों तक का विवेचन किया है। हिन्दी नाट्य साहित्य में आये युगानुरूप परिवर्तन की प्रस्तुति इसी अध्याय में है। आधुनिक काल में समय की माँग के अनुसार नाटक के विविध रूप - एकांकी नाटक, गीतिनाट्य, रेडियो नाटक, दूरदर्शन नाटक आदि का प्रचलन बढ गया है। रेवती सरन शर्मा ने भी इस बात के महत्व को जानकर बडी मात्रा में रेडियो और दूरदर्शन नाटकों की रचना की है।

द्वितीय अध्याय - "रेवती सरन शर्मा के 'चिराग की लौ' नाटक का कथ्यगत अनुशीलन।"

इस अध्याय में 'चिराग की लौ' नाटक के कथ्य को प्रस्तुत किया है। इसमें भ्रष्टाचार का चित्रण, आदर्श की प्रतिष्ठापना, प्रेम के खोखले आदर्शों पर प्रहार, रिश्वत की समस्या, बोगस अखबार के बोगस संपादकों पर व्यंग्य, रिश्वत की समस्या को बढावा देनेवाले दलालों का पर्दाफाश करना, दाता, सभ्यता और मानवता के नकाब के नीचे घूमनेवालों को बेनकाब करना, नि:स्वार्थ देश-सेवा का उच्चादर्श प्रस्तुत करना, ईमानदार अफसरों की माँग का उद्घाटन करना तथा मध्यवर्गीय युवती की मानसिकता का चित्रण करना आदि का विवेचन किया है।

तृतीय अध्याय - "रेवती सरन शर्मा के 'चिराग की लौ' नाटक का शिल्प।"

इस अध्याय में 'चिराग की लौ' नाटक का शिल्प की दृष्टि से विवेचन किया है। इसमें वस्तुविधान, चरित्र-शिल्प, संवाद-शिल्प, देश-काल-वातावरण, भाषा-शिल्प, शीर्षक का अभिनव प्रयोग तथा उद्देश्य का विवेचन किया हैं।

चतुर्थ अध्याय -"रेवती सरन शर्मा के 'चिराग की लौ' नाटक की पंचीयता।"

इसमें रंगमंच के स्वरूप के साथ हिन्दी रंगमंच की विकास परंपरा को स्पष्ट करते हुए 'चिराग की लौ' नाटक का पंचीयता की दृष्टि से समग्र विवेचन किया है। प्रस्तुत नाटक को निर्देशक एवं व्यवस्थापक, अभिनय, रूपसज्जा, दृश्यसज्जा, प्रकाश-योजना, ध्वनि एवं संगीत योजना, रंगमंचीय प्रस्तुती और दर्शकिय संवेदना आदि रंगमंचीय तत्वों के आधार पर परखा गया है।

अंत में उपसंहार दिया गया है, जो इस लघु शोध-प्रबन्ध का सार रूप है। उपसंहार के उपरांत संदर्भ ग्रंथसूची दी है।

ऋण-निर्देश :-

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले तथा मुझे समय-समय पर प्रोत्साहित करनेवाले गुरूजनों, परिवार के सदस्यों एवं आत्मिय मित्रों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझाता हूँ।

यह लघु-शोध प्रबन्ध श्रध्देय गुरूवर्य डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण, अधिव्याख्याता, हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के आत्मीय एवं प्रेरक निर्देशन का फल है। उन्होंने अपनी कार्यव्यस्तता के बावजूद भी समय-समय पर मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर करके मुझे सही दिशा में मार्गदर्शन किया। उनके प्रति अपनी कृतज्ञता शब्दों में प्रकरना मेरे लिए असंभव है। मै उनके प्रति सदैव कृतज्ञ रहूँगा।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. पी. एस. पाटीलजी से मुझे प्रस्तुत अध्ययन में योग्य परामर्श एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। अत: मै उनका ऋणी हूँ। शिवाजी विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. वसन्त केशव मोरे जी तथा आदरणीय गुरूवर्य प्राचार्य, मा. के. यादवजी, सौ. एम. एस. जाधव, श्रीमती रजनी भागवत, प्रा. हिरेमठजी का

आशीर्वाद और प्रेम मेरे साथ रहा है । उनके प्रति मैं सविनय आभार प्रकट करता हूँ ।

मेरे परमपूज्य माता-पिता के आशीर्वाद से ही मैं यह कार्य पूरा कर सका । साथही मेरे भाई और बहनों का भी अच्छा सहयोग मुझे मिला है । अत: मैं उनके ऋण में सदैव रहूँगा ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति मुझे शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर के बॅ.खर्डेकर ग्रंथालय से हुई । अत: ग्रंथालय के सभी कर्मचारियों का मैं ऋणी हूँ ।

इस लघु शोध-प्रबन्ध का टंकन करनेवाले श्री.बालकृष्ण रामचंद्र सावंत जी के प्रति आभार प्रकट करता हूँ ।

इस शोध-कार्य को संपन्न बनाने में जिन विद्वानों,आत्मिय मित्रों एवं सज्जनों ने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में मेरी सहायता की है,अन्त में उन सबका आभार मानकर मैं इस लघु शोध-प्रबन्ध को विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ ।

तिथि 27 MAY 1996
कोल्हापुर ।

शोध-छात्र

(श्री.चतुर्भुज हंबीरराव शिंदे)

अ नु क्र म णि का

पृष्ठ क्रमांक

प्रथम अध्याय:- "हिन्दी नाटकों की विकास परंपरा तथा रेवती सरन शर्मा के नाटक।" १

१.१ संस्कृत नाटकों की परंपरा।

१.२ भारतेन्दुपूर्व हिन्दी नाटक।

१.३ भारतेन्दुकालीन नाटक।

१.४ प्रसादकालीन हिन्दी नाटक।

१.५ प्रसादोत्तर हिन्दी नाटक (स्वाधिनतापूर्व कालखण्ड)।

१.६ स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक।

१.७ गीतिनाट्य।

१.८ स्कांकी नाटक।

१.९ रेडियो नाटक।

निष्कर्ष --

द्वितीय अध्याय: "रेवती सरन शर्मा के 'चिराग की लौ' नाटक का कथ्यगत अनुशीलन।" २७

प्रस्तावना

२.१ भ्रष्टाचार का चित्रण।

२.२ आदर्श की प्रतिष्ठापना।

२.३ प्रेम के खोखले आदर्शों पर प्रहार।

२.४ रिश्वत की समस्या का चित्रण।

२.५ नि:स्वार्थ देश-सेवा का उच्च आदर्श प्रस्तुत।

२.६ बोगस अखबार के बोगस संपादकों पर व्यंग्य।

२.७ नौकरी करने की तथाकथित आधुनिकतापर प्रहार।

२.८ दाता, सभ्यता और मानवता के नकाब के नीचे घूमनेवालों का पर्दाफाश।

२.९ ईमानदार अफसरों की माँग का उद्घाटन ।
२.१० मध्यवर्गीय युवती की मानसिकता का चित्रण ।
निष्कर्ष --
तृतीय अध्याय - "रेवती सरन शर्मा के 'चिराग की लौ' नाटक का शिल्प" ५१
३.१ शिल्प से तात्पर्य ।
३.२ वस्तु-शिल्प (अंक तथा दृश्य विभाजन)
३.२.१ पहला अंक ।
३.२.१.१ पहला दृश्य ।
३.२.१.२ दूसरा दृश्य ।
३.२.२ दूसरा अंक ।
३.२.२.१ पहला दृश्य ।
३.२.२.२ दूसरा दृश्य ।
३.२.२.३ तीसरा दृश्य ।
३.२.३ तीसरा अंक ।
३.२.३.१ पहला दृश्य ।
३.२.३.२ दूसरा दृश्य ।
३.२.४ कथा वस्तु में अंतर्कथाओं का संगठन ।
३.२.४.१ मुख्य कथा ।
३.२.४.२ गौण कथा ।
३.२.४.३ शोकान्तिका ।
३.२.५ कथावस्तु में संघर्षतत्व ।
३.२.५.१ संघर्ष का आरंभ ।
३.२.५.२ संघर्ष का विकास ।
३.२.५.३ चरम सीमा ।
३.३. चरित्र-शिल्प ।
३.३.१ किशोर
३.३.१.१ आदर्शवादी ।

३.३.१.२ ईमानदार ।

३.३.१.३ कर्मठ ।

३.३.१.४ जनता के प्रति आस्था ।

३.३.१.५ दायित्व का निर्वाह ।

३.३.१.६ बनावट और दिखावे से दूर ।

३.३.१.७ आत्मपीडित ।

३.३.१.८ चिराग की लौ ।

३.३.२ तारा ।

३.३.३ रानी ।

३.३.४ नसीम ।

३.३.५ जयंत ।

३.३.६ गिरीश

३.४ संवाद-शिल्प

३.४.१ संक्षिप्त संवाद ।

३.४.२ मन:स्थितिप्रवण संवाद-शिल्प ।

३.४.३ काव्योचित मधुर संपाद ।

३.४.४ सूचनात्मक खण्डित संवाद ।

३.४.५ सांकेतिक संवाद ।

३.४.६ वैज्ञानिक साधन और संवाद ।

३.४.७ चरित्र-प्रकाशक संवाद ।

३.४.८ देश-काल-वातावरण सूचक संवाद ।

३.५ देश-काल वातावरण ।

३.५.१ सामाजिक परिस्थिति ।

३.५.२ भाषा ।

३.५.३ रहन-सहन ।

३.५.४ रंगमंच सज्जा ।

३.५.५ आर्थिक परिस्थिति ।
३.५.६ संकल्पन त्रय ।
३.६ भाषा-शिल्प ।
३.६.१ पात्रानुकूल भाषा-शैली ।
३.६.२ व्यंग्यात्मक भाषा-शैली ।
३.६.३ काव्यात्मक भाषा-शैली ।
३.६.४ वर्णनात्मक भाषा-शैली ।
३.६.५ प्रश्नात्मक भाषा-शैली ।
३.६.६ मुहावरेदार भाषा-शैली ।
३.६.७ विभिन्न भाषा के शब्दों का प्रयोग ।
३.६.८ सूक्तियाँ ।
३.६.९ शेरो-शायरी ।
३.७ शीर्षक का अभिनव प्रयोग ।
३.८ उद्देश्य
निष्कर्ष --

चतुर्थ अध्याय "रेवती सरन शर्मा के 'चिराग की लौ' नाटक की मंचीयता" १००

४.१ रंगमंच से तात्पर्य ।
४.२ हिन्दी रंगमंच ।
४.२.१ आरंभिक स्थिति ।
४.२.२ भारतेन्दुयुगीन हिन्दी रंगमंच ।
४.२.३ प्रसादयुगीन हिन्दी रंगमंच ।
४.२.४ प्रसादोत्तर हिन्दी रंगमंच ।
४.३ 'चिराग की लौ' नाटक की मंचीयता ।
४.३.१ निर्देशक एवं व्यवस्थापक ।
४.३.२ अभिनय ।

४.३.३ रूप सज्जा ।

४.३.४ दृश्य सज्जा ।

४.३.५ प्रकाश योजना ।

४.३.६ ध्वनि एवं संगीत योजना ।

४.३.७ रंगमंचीय प्रस्तुति और दर्शकीय संवेदना ।

निष्कर्ष -

उपसंहार । १२१

संदर्भ ग्रंथ-सूची । १२८